Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION (RPSC)

पेपर – I || भाग – II

भारत का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भारत का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास

विषय-सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1
	प्राचीन भारत	
1.	हड़प्पा सभ्यता	17
2.	वैदिक काल	37
3.	बुद्धकाल	48
4.	मौर्य साम्राज्य	69
5.	मौर्योत्तर काल	82
6.	गुप्तकाल	101
	मध्यकालीन भारत	
1.	पूर्वमध्यकाल	114
2.	दिल्ली सल्तनत	130
3.	मुगलकाल	145
4.	दक्षिण भारत	160
5.	आधुनिक भारत	164

प्राचीन इतिहास

परिचय

भारत का इतिहास एवं संस्कृति

(Indian History and Culture)

इतिहास में वर्तमान में रहकर मानव अतीत/ भूत का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है । कुछ निश्चित साक्ष्यों (साहित्यिक एवं पुरातात्विक) के सहारे अतीत की दोबारा पुनर्रचना की जाती है । इस रूप में इतिहास वर्तमान एवं भूत के बीच एक संवाद (Dialogue) कायम करता है । E.H. कार के अनुसार इतिहास के तहत किसी कालखंड में मानव समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति का अध्ययन किया जाता है ।

इतिहास			
संस्कृति	समाज	अर्थ–व्यवस्था	राजनीति
कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान, त्यौहार, रीति–रिवाज आदि	वर्ण, जाति, अधिकार, महिलाओं की स्थिति, शिक्षा, मनोरंजन के साधन आदि का अध्ययन	कृषि, व्यापार, वाणिज्य, उद्योग, नगरीकरण	राजनीति का स्वरूप, प्रशासन की विशेषता

इतिहास एवं काल विभाजन

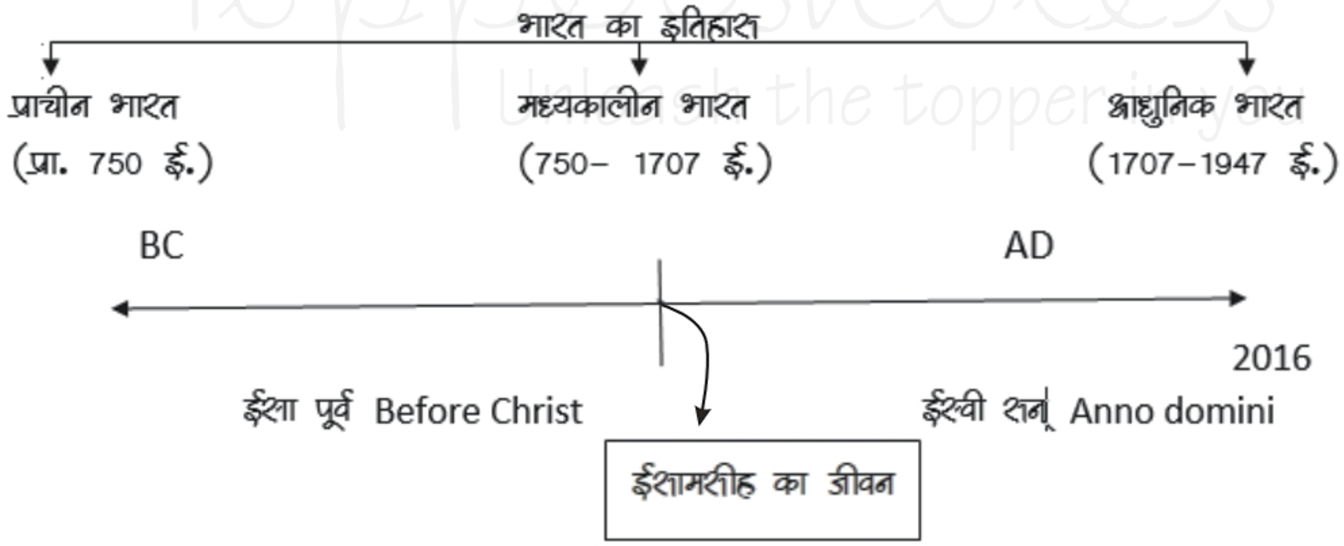

प्राचीन भारत

1. पाषाण काल – { विश्व संदर्भ (20 लाख ई.पू. – 3000 ई.पू.) (प्राक् इतिहास)
   भारतीय संदर्भ (5 लाख ई.पू. – 3000 ई.पू.)
2. हडप्पा सभ्यता (2600 – 1900 ई.पू.) }
3. वैदिक काल (1500 – 600 ई.पू.)
4. मौर्यकाल/ बुद्धकाल (600 – 321 ई.पू.)

5. मौर्यकाल (321 - 185 ई.पू.)
6. मौर्योत्तर काल (200 ई.पू. – 300 ईस्वी)

7. गुप्त काल (319- 550 ईस्वी)
8. गुप्तोत्तर काल (550 - 750 ईस्वी)

इतिहास की शब्दावलियाँ (Glossary of History)

1. प्राक् इतिहास (Pre History) – लगभग 20 लाख - 3000 ई.पू. तक का कालखंड । इसे जानने के लिए लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है ।
   अतः पुरातात्विक सामग्रियों (जीवाश्म, पत्थर के औजार, मृदभांड, हड्डियाँ आदि) के सहारे इसे जाना जाता है।
2. आद्य इतिहास (Proto History) – लगभग 3000 - 600 ई.पू. का कालखंड। इस काल का लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध है लेकिन इसे पढा नहीं जा सका है । अतः इसे भी पुरातत्व के सहारे जाना जाता है। उदा. - हडप्पा सभ्यता
3. इतिहास (History) – 600 ई.पू. से आगे का कालखंड । यहाँ से लिखित साक्ष्य भी मिलने प्रारम्भ होते हैं जिन्हें पढ लिया गया है ।
4. संस्कृति (Culture) – किसी स्थान या देश विदेश के लोंगों की जीवनशैली को संस्कृति कहा जाता है। इसके तहत कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, भाषा, खानपान, वेशभूषा, रीति-रिवाज, आचारः व्यवहार आदि आता है। इसका निर्माण विभिन्न पीढियों के सामूहिक योगदान से एक लम्बे कालखंड के तहत होता है। संस्कृति सदैव सतत् रूप से (Continuously/Gradually) विकसित होती रहती है।
5. सभ्यता (Civilization) - संस्कृति के मानकीकरण की व्यवस्था सभ्यता कहलाती है। मानव द्वारा जब उन्नत तकनीकी तथा उच्च आर्थिक एवं भौतिक समृद्धि की व्यवस्था प्राप्त कर ली जाती है तब इसे सभ्यता की व्यवस्था कहा जाता है । नगरीकरण सभ्यता का आवश्यक लक्षण होता है ।

1. पाषाण काल (20 लाख ई.पू.)

- मानव उद्विकास
- हिमकाल
- पाषाण उपकरण एवं काल विभाजन

मानव उद्विकास - पृथ्वी पर मानव जाति बनी बनायी अवतरित नहीं हुई है । बल्कि अपने पूर्ववर्ती जीव रूपों से इनका उद्विकास हुआ है ।

1859 में चार्ल्स डार्विन की पुस्तक ऑरिजन ऑफ स्पीसीज के प्रकाशन के बाद मानव को उद्विकास का परिणाम माना गया । चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त - प्राकृतिक चयन (Theory of natural selection) तथा योग्यतम उत्तरजीविता (Survival of the best) के सिद्धान्त को अन्य जीवों के साथ-साथ मानव पर भी लागू किया जाता है ।

तमाम प्रयोगों से यह बात साबित हो चुकी है कि लगभग 20 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू. तक प्राइमेट से मानव का उद्विकास हुआ । जिसे निम्नवत देखा जा सकता है -

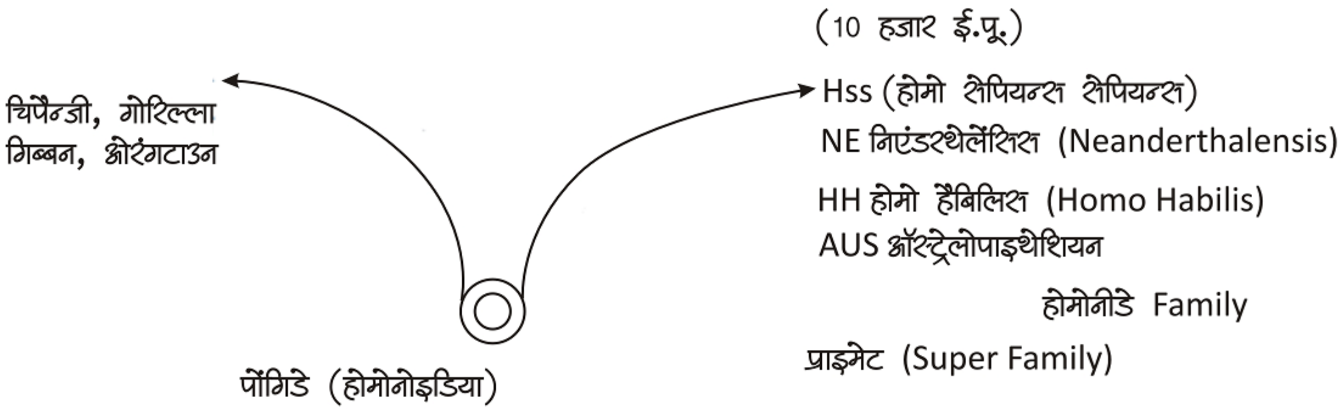

लगभग 26 लाख ई.पू. के आस- पास प्राइमेट से ऑस्ट्रेलोपिथेकस के रूप में प्रथम होमोनीडे का उद्भव हुआ। प्राइमेट तथा ऑस्ट्रेलोपिथेकस के बीच मुख्य अंतर यह था कि वह **(Australo)** दो पैरों पर चल सकता था। धीरे-धीरे होमोनीडे की विभिन्न प्रजातियों का विकास हुआ। कालक्रम में मानव की कपाल धारिता **(Cranial Capacity)** बढती गई। कई शारीरिक लक्षण उभरते गये। महत्वपूर्ण जीनिक **(Genetic)** परिवर्तन होते गये तथा मानव में बौद्धिक एवं कलात्मक प्रतिभा का विकास हुआ। परिणामस्वरूप भाषा, संचार, कला, ज्ञान, धर्म, विज्ञान, दर्शन, रीति-रिवाज आदि के रूप में मानव संस्कृति का विकास हुआ।

उपप्रकार	**Man**	**CC**	**Tools**	महत्वपूर्ण विशेषता
1. आस्ट्रे. अफ्रीकेनुस 2. आस्ट्रे. रोबोस्टस 3. जेजोनथ्रोपस (ब्रोइसई)	ऑस्ट्रेलोपिथेकस (26 लाख ई. पू.) होमो हैबिलिस **Homo Habilis** (20 लाख)	450 – 500 **CC** 700 **CC** 800 **CC**	**Pebble** (नदियों के बहाव से निर्मित औजारों का प्रयोग) ओल्डुवा	1. मुख्यतः शाकाहारी था। 2. केवल दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका तक सीमित 1. प्रथम उपकरण निर्माता मनुष्य 2. शाकाहारी के साथ साथ मांसाहारी लेकिन छोटे जानवरों का शिकार 3. दक्षिणी – पूर्वी अफ्रीका तक सीमित
1. पिथेकैंच थ्रोपस 2. जावामैन 3. पिकेनसिस	होमो इरेक्टस **Homo Erectus** (17लाख)	850 – 1100 **CC**	**Handaxe** हस्तकुठार क्लेक्टोनी लेवालोसियन (गोलाकार) (कछुए के आकार का)	1. प्रथम मनुष्य जो अफ्रीका के बाहर निकला, एशिया तथा यूरोप से भी साक्ष्य प्राप्त 2. यह मैमथ जैसे बडे जानवरों का शिकार करता था। 3. आग का आविष्कार करने वाला प्रथम मनुष्य
	नियन्डरथल (1.35 लाख)	1100 – 1400 **CC**	**Flake** (फलक) औजारों का बेहतर प्रयोग करने वाला मुस्तुरिया फ्रांस (संस्कृति का निर्माता)	1. यह पूर्व से भी अधिक दक्ष शिकारी मानव था। 2. यह प्रथम मनुष्य था जिसने शवों को दफनाने की प्रक्रिया का प्रारम्भ किया।

1. क्रोमैमनेन (फ्रांस) 2. ब्रोकनहिल (प.एशिया) 3. ग्रिमाल्डी (आस्ट्रेलिया) 4. संसलाद (South Africa)	**Homo sapiens** (40 हजार से 10 हजार ई.पू.)	1300 – 1600 CC	**Flake** के और बेहतर औजारों का निर्माण हड्डी + जानवरों के सींग द्वारा बने औजारों का प्रयोग	1. सर्वाधिक दक्ष शिकारी 2. स्पष्ट भाषा बोलने वाला एवं संचार करने वाला मानव 3. उच्चस्तरीय कला का प्रदर्शन करने वाला मानव (मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि) उदा.– फ्रांस के लास्काव स्पेन के अल्तामीरा तथा भारत के भीमबेटका की गुफाओं से सुंदर चित्रकारियाँ प्राप्त हुई हैं ।

<u>मानव उद्‌विकास एवं विसरण का सिद्धान्तः</u>– जीव विज्ञान में माना जाता है कि प्रारंभिक मानव का विकास सर्वप्रथम दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका में हुआ तथा यहीं से मानव जाति का प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हुआ। इसके वैज्ञानिक तथा पुरातात्विक दोनों साक्ष्य उपलब्ध हैं।

<u>वैज्ञानिक साक्ष्य</u> – **Human** जीनोम प्रोजेक्ट (**DNA**) द्वारा जीन (**DNA**) की कडियों को जोडकर मातृवंशावली तैयार की गई है जो अंतिम रूप से अफ्रीका में जाकर समाप्त हो जाती है ।

<u>पुरातात्विक साक्ष्य</u> – अफ्रीका की रिफ्ट घाटी (युगांडा, रवांडा, तंजानिया, केन्या) में ओल्डवाईगार्ज (तंजानिया) तथा तुरकानाझील (केन्या) आदि स्थलों से प्रारंभिक मनुष्यों के जीवाश्मों तथा पत्थर के औजारों की साथ-साथ प्राप्ति हुई है ।

<u>उद्‌विकास के दौरान मानव एवं पर्यावरण सम्बन्ध</u>

(26 लाख – 10 हजार ई.पू.)

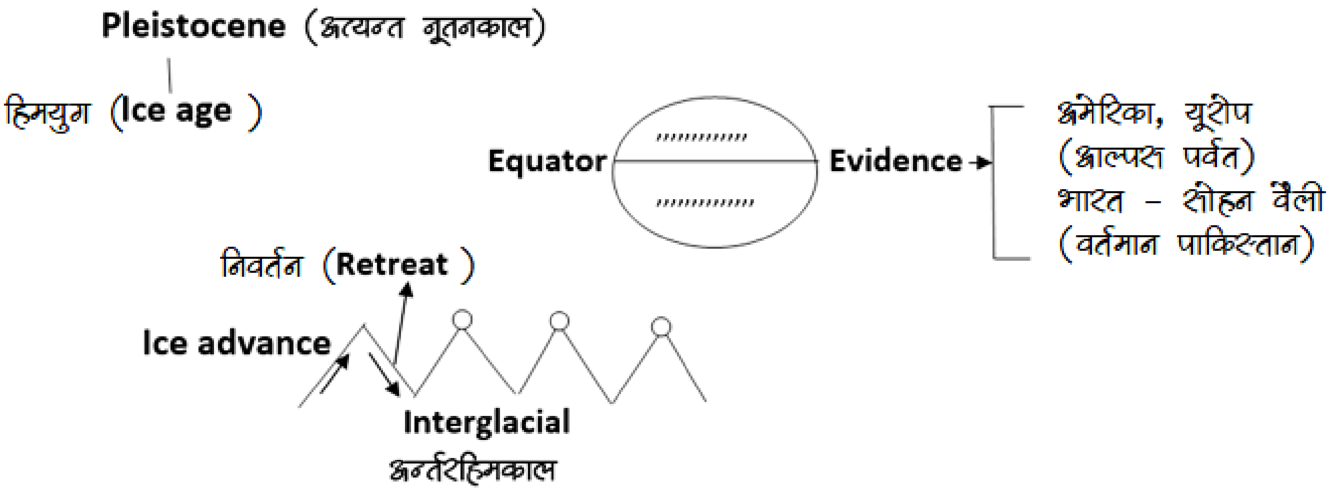

जिस समय मानव का उद्‌विकास हो रहा था भूमध्य रेखा को छोडकर पूरी पृथ्वी पर बडे-बडे हिमयुग के दौर आते रहते थे। बर्फ की आँधियां चला करती थी । कभी-कभी दो बडे हिमकालों के बीच मौसम थोडा सा गर्म एवं शुष्क होता था जिसे अंतःहिमकाल कहा गया है। इन्हीं चरम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मानव ने अपनी उत्तरजीविता कायम की ।

पाषाण उपकरण एवं काल विभाजन:– अपने विकास के दौरान मानव ने पत्थर के विभिन्न प्रकार के औजारों का निर्माण किया। इन्हें इनके आकार प्रकार तथा बनावट के आधार पर तीन भागों में बाँटकर देखा जाता है। जो निम्न है –

पाषाणकाल (**Stone age**)

- पुरापाषाण काल (**Paleolithic**) (20 लाख – 10 हजार ई.पू.)
- मध्यपाषाण काल (**Mesolithic**) (10 हजार – 6000 ई.पू.)
- नवपाषाणकाल (**Neolithic**) (6000 – 3000 ई.पू.)

पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल → मानव मुख्यतः शिकारी + संग्रहकर्ता

नवपाषाणकाल → भोजन उत्पादक

1. Human Evolution

2. प्लेइस्टोसीन युग (Pleistocene Age)
हिम युग (Ice Age)

3. पाषाण काल (Stone Age)

- पुरापाषाण **Paleolithic** (20 लाख – 10 हजार)
- मध्यपाषाण **Mesolithic** (10 – 6000 ई.पू.) **Transition** संक्रमण काल
- नवपाषाण **Neolithic** (6000– 8000) उत्पादक मानव, कृषि व पशुपालन, स्थायी आवास, मृदभाण्ड

पुरापाषाण, मध्यपाषाण → शिकारी + संग्रहकर्ता

शिकारी संग्रह अवस्था से मानव के भोजन उत्पादन अवस्था में बदलाव के कारण

1. जलवायु परिवर्तन का सिद्धान्त – R पेम्पली गार्डन चाइल्ड

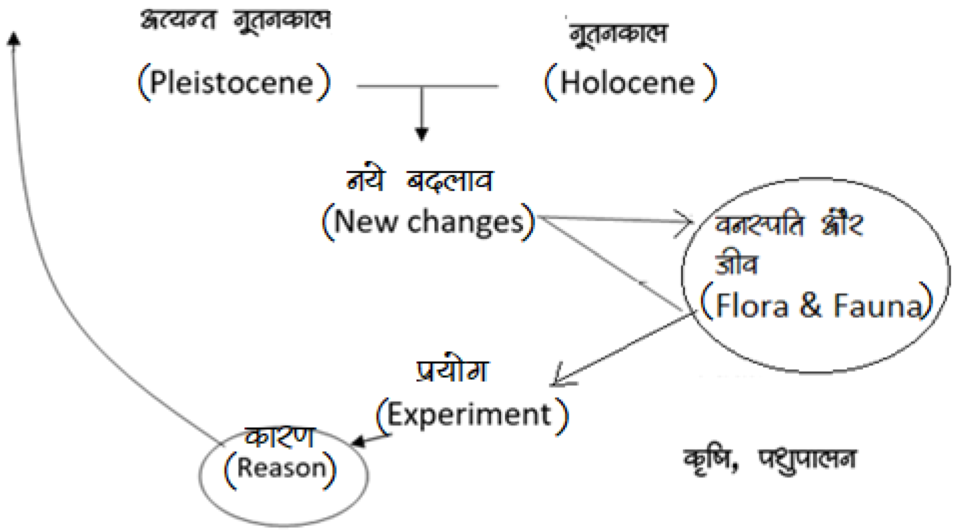

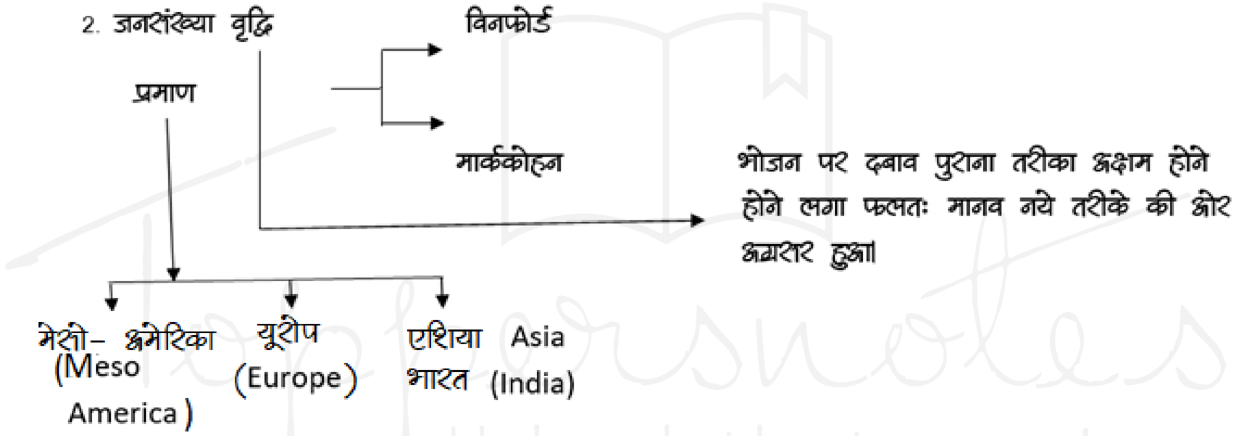

3. <u>सांस्कृतिक कारण – ब्रेडवुड</u>

पूर्व में विकास इसलिए नहीं हुआ कि मानव संस्कृति इसके लिए तैयार नहीं थी । मध्यपाषाण काल तक आते-आते मानव ने आपसी विनिमय उपहार, विवाह, नातेदारी प्रारम्भ किया ।

↓

New Development हुये ।

4. उत्पादन सम्बन्ध का सिद्धान्त – बारबरा वेण्डर

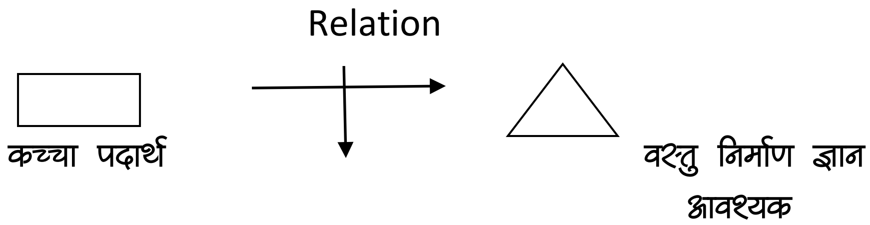

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मूल्यांकनः–

शिकारी संग्रहकर्त्ता से भोजन उत्पादन की अवस्था में बदलाव एक बड़ा परिवर्तन था । अतः किसी एक कारण मानव को इसके लिए जिम्मेदार नहीं माना जा सकता । कमोबेश सभी कारण इसके लिए उत्तरदायी रहे होंगें ।

भारत में पाषाणकाल (**Stone age in India**)

जिस प्रकार मानव के जीवाश्म अफ्रीका, यूरोप तथा एशिया के अन्य भागों से प्राप्त होते हैं जलवायु सम्बन्धी समस्या के कारण भारत में इस प्रकार के साक्ष्य नहीं मिलते हैं । अतः भारत में पाषाणकाल का अध्ययन पत्थर के औजारों तथा दूसरे पुरातात्विक सामग्रियों के सहारे किया जाता है । जो निम्न हैं –

भारत में पाषाणकाल **Stone age in India**

पुरापाषाण काल	मध्यपाषाण काल	नवपाषाण काल
(5 लाख–10 हजार)	(10–6000)	(6000– 3000)

पुरापाषाण काल :– यह एक लम्बा काल था । अतः इसे तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है

निम्नपुरापाषाण **Lower Paleolithic**	मध्यपुरापाषाण **Middle Paleolithic**	उच्चपुरापाषाण **Upper Paleolithic**
(5 लाख – 50 हजार)	(50 हजार – 40 हजार BC)	(40 हजार – 10 हजार)

निम्नपुरापाषाण काल

Tools – उपकरण, **Site**– स्थल **important features**– मुख्य विशेषताएँ

(a) औजार – इस काल में मानव ने मुख्यतः कोर (**core**) उपकरणो का निर्माण किया है जो क्वार्टजाइट जैसे कठोर पत्थरों के बने है। मुख्य औजारों में **Handaxe** (हस्तकुठार), क्लीवर (विदारणी), चापर तथा चापिंग आते हैं।

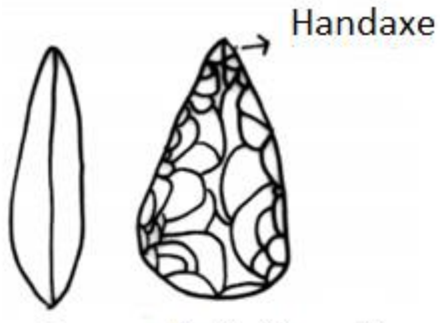

मुख्यतः काटने के लिए प्रयोग

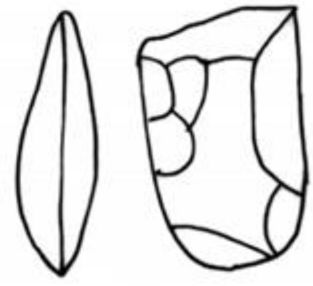

क्लीवर
छिलने के लिए प्रयोग

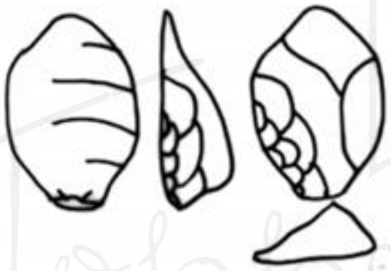

Unifacial
एक ही कार्य धार

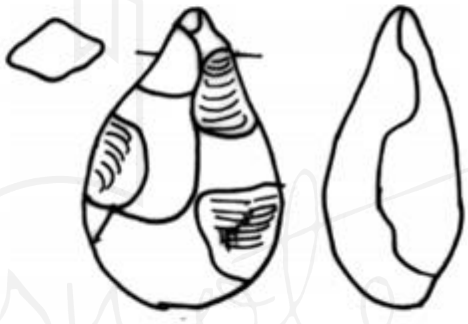

दोनों तरफ कार्य धार

(b) <u>स्थल</u> – भारत में इस काल के मुख्य स्थल निम्न है ।

(1) सोहन घाटी (पाकिस्तान)–यह एक प्रतिनिधि स्थल है ।

(2) बेलनघाटी (इलाहाबाद,मिर्जापुर क्षेत्र) – यहाँ से पाषाणकाल की तीनों अवस्थाओं के साक्ष्य मिलते है ।

(3) डीडवाना (राजस्थान)

(4) भीमबेटका (मध्य प्रदेश)

(5) दक्षिण भारत –पल्लवरम, अतिरपक्कम, गिद्दलूर (तमिलनाडु)

(c) <u>मुख्य विशेषताएँ</u>

(1) भारत में पहला Handaxe पल्लवरम (चेन्नई के पास) से राबर्टब्रूसफुट ने प्राप्त किया था (1863) अगला Handaxe अतिरपक्कम से मिला था ।

(2) भारत में केवल केरल तथा ऊपरी गंगा घाटी को छोडकर सभी स्थानों से निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुये है ।

(3) विश्व संदर्भ में ऑस्ट्रेलोपिथेकस hh तथा he तीनों निम्नपुरा–पाषाणकाल से आते हैं ।

मध्यपुरापाषाण काल

(a) औजार : इस काल में मानव के औजार निर्माण में बदलाव हुआ । इसके तहत उसने कोर के बजाय **Flake** (पपडी फलक) पर भारी संख्या में निर्माण किया है । अतः इसे फलक संस्कृति का काल भी कहा जाता है । ये औजार चर्ट + जैस्पर जैसे नरम पत्थरों के बने हैं ।

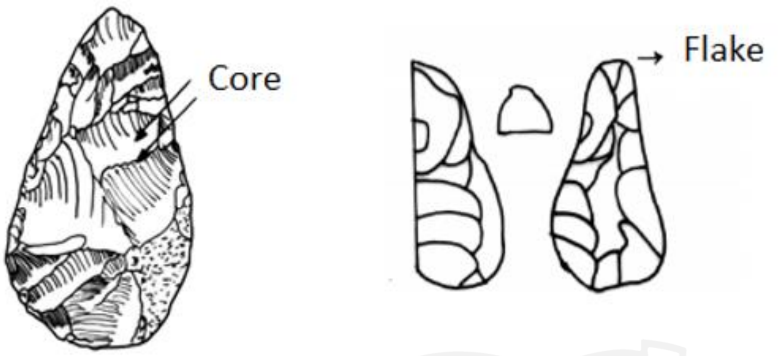

(b) मुख्य स्थल : भारत में नेवासा (गोदावरी तट महाराष्ट्र) तथा नर्मदा घाटी में इस काल के स्थल प्राप्त हुये है ।

(c) मुख्य विशेषताएँ

(i) नर्मदा घाटी में हथनौरा नामक स्थल से अरून ढोलकिया ने एक मानव जीवाश्म प्राप्त किया था । इसे हथनौरा नर्मदामैन कहा जाता है । पूर्व में इसे होमो इरेक्टस का जीवाश्म माना गया, लेकिन वर्तमान में इसे आद्य होमो सेपियन्स का जीवाश्म माना जाता है ।

(ii) विश्व संदर्भ में निएन्डरथल का सम्बन्ध इसी मध्यपुरापाषाण काल से है ।

उच्चपुरापाषाण काल

(a) इस काल तक आते आते मानव आधुनिक हो चुका था । अतः उसकी गतिविधियों में पूर्व की अपेक्षा और तेजी से वृद्धि हुई । इसकी विशेषताएं निम्न हैं –

I. Blade, point Boxer जैसे बेहतर फलक औजारों का निर्माण ।
II. हड्डी के औजारों का निर्माण ।
III. मछली मारने वाले काँटे (हारपून) का प्रयोग ।
IV. इस काल में मानव ने कलाओं (मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि) का बेहतर प्रदर्शन किया है ।

कला के साक्ष्य (भारत में)

(a) मूर्तिकला : इस काल में मानव द्वारा वीनस (मातृदेवी) की मूर्तियों का निर्माण किया गया । बेलनघाटी में लोहदानाला नामक स्थल से अस्थि की बनी मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।

(b) चित्रकारी पाषाणकालीन चित्रों की विशेषताएँ

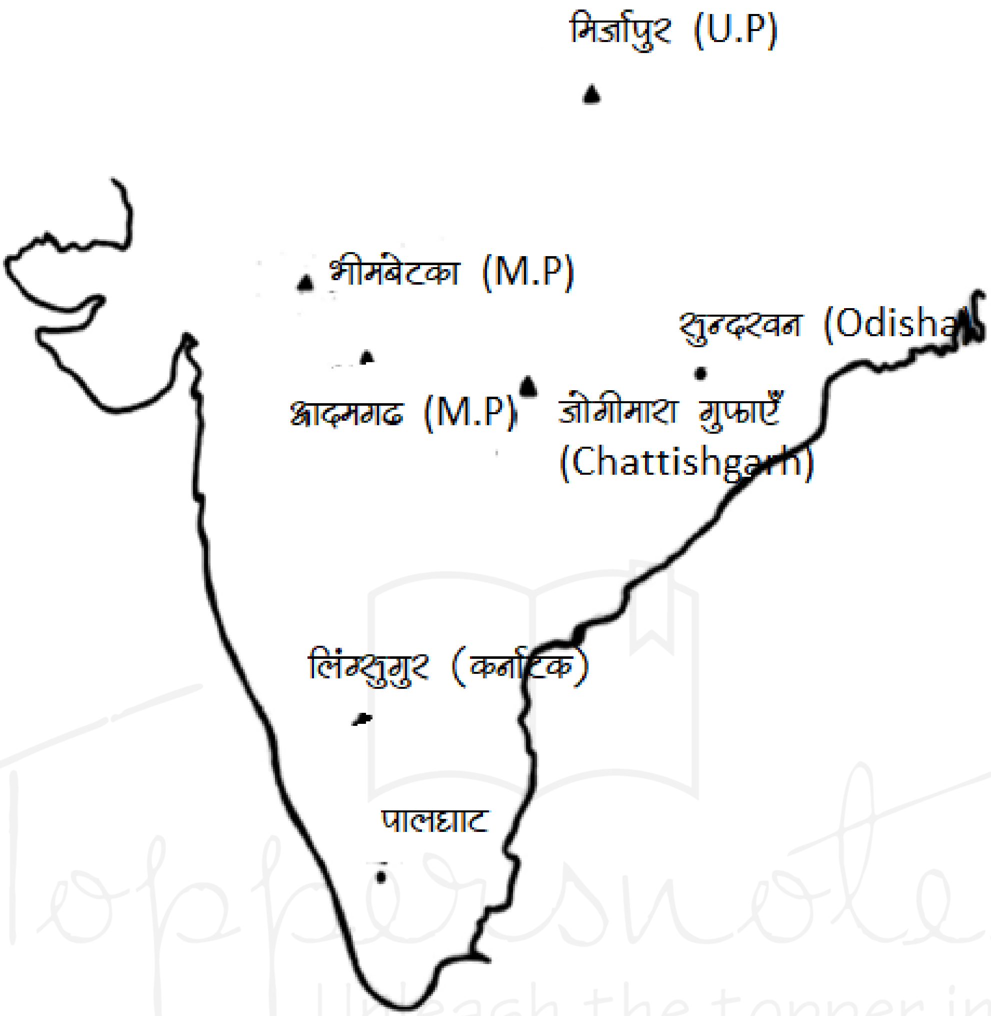

(1) पाषाणकालीन चित्रों को गुफाओं की दीवारों तथा फर्शों पर पत्थर के नुकीले औजार से खुरदुरा बनाकर चित्रित किया गया है ।
(2) गेरूआ तथा (मुख्य रंग), सफेद, हरा, पीला, आदि रंगो का प्रयोग किया गया है ।
(3) रंगों का निर्माण प्राकृतिक पदार्थों (वनस्पति ,खनिज आदि) से किया गया है। इसे तेलीय बनाने के लिऐ अण्डे की जर्दी तथा पशुओं की चर्बी का मिश्रण किया गया है ।
(4) चित्रों का विषय शिकार तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित है। हिरण, बारहसिंहा, नीलगाय, सुअर, जंगली भैंसा आदि जानवरों को घेरकर शिकार करते हुए चित्र बनाये गये है । (कुछ विद्वानों का कहना है कि ऐसा उन्होनें जादुई विश्वास के कारण किया है ।)
(5) भीमवेटका (मध्य प्रदेश) भारत का पाषाणकालीन चित्रों की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध स्थान है । इसकी लगभग 500 से अधिक गुफाओं में सैकडों चित्र प्राप्त होते है । भीमवेटका के चित्रों नृत्य करते हुए, मदिरापान करते हुए, जुलूस में भाग लेते हुए चित्रों को काफी बेहतर चित्र माना जाता है । भीमवेटका के चित्र यूनेस्को के विश्व धरोहर की सूची में शामिल है ।

<u>मध्यपाषाण काल</u> (**Mesolithic Microlithio**)

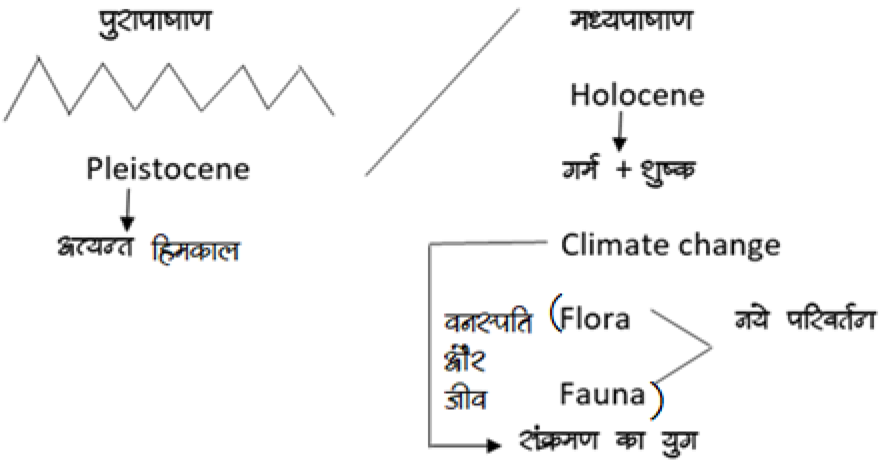

मध्यपाषाण काल संक्रमण का काल था। इस समय पुरानी जलवायु की समाप्ति हुई तथा आज जैसी नई जलवायु का आगमन हुआ । फलतः मानव के औजार, शिकार के तरीके तथा अन्य गतिविधियों में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए ।

<u>विशेषताएँ- इस काल की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्न है</u> –

(a) <u>औजार</u> – इस समय मानव ने दूर से फेंककर मारने वाले औजारों (प्रक्षेपास्त्र तकनीकी) का निर्माण किया । जिसके तहत तीर, धनुष, भाले आदि का प्रयोग किया गया । उसने पत्थर के छोटे-छोटे औजारों (microlithic) का निर्माण किया जो निम्न है –

त्रिकोण (**Triangle**) अर्द्धचन्द्राकार समलम्ब (Trape)

(b) <u>शिकार एवं भोजन</u> – इस काल में मानव मुख्यतः शिकारी व संग्रहकर्ता ही था । लेकिन उसके शिकार व शिकार करने के तरीके दोनों में बदलाव हुआ । छोटे जानवरों का शिकार करना मछली मारना, पक्षियों का शिकार करना (पर्चिग पक्षी नहीं/अनाज खाने वाली नहीं) खाद्य वस्तुएँ बटोरना आदि मानव के मुख्य व्यवसाय थे ।

(c) जनसंख्या वृद्धि-इस काल में जनसंख्या में वृद्धी हुई । इसका मुख्य कारण मानव के आहार में पूर्व की अपेक्षा अधिक विविधता (प्रोटीन, विटामिन्स, खनिज आदि) का आना था ।

(d) यन्त्र तन्त्र कृषि एवं पशुपालन का प्रारम्भ- विश्व संदर्भ में छिटपुट ढंग से कृषि एवं पशुपालन का प्रारम्भ मध्यपाषाण काल में ही हो गया । मानव द्वारा सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू बनाया गया । इनका स्लेज गाडियों में प्रयोग किया जाता है । नागोर (राजस्थान), तथा आदमगढ (मध्य प्रदेश) आदि भारतीय स्थानों से पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त होते है ।

मध्य गंगा घाटी (बेलनघाटी) के कई महत्वपूर्ण स्थलों-सरायनाहरराय, चोपानीमांडो , महदहा (सभी प्रतापगढ जिले में) से मध्यपाषाण काल के कई महत्वपूर्ण साक्ष्य (अस्थायी आवास ,पशुपालन, शव दफनाना आदि) प्राप्त हुऐ है ।

Important for pcs – बेलनघाटी के मध्यपाषाणिक स्थल सरायनाहरराय-प्रतापगढ

(a) यहाँ से पत्थर (प्रस्तर) के औजार (माइक्रोलिथिक) तथा हड्डियों के उपकरण मिले है।

(b) इनके आवास घास -फूस के बने थे लेकिन इन्होंने कही-कही पत्थर का फर्श बनाने की कोशिश की है । खुदाई से घरों के चारों ओर खम्भे गाडने के निशान मिले है ।

(c) यहाँ से भी आवास के साथ एक पंक्ति में तीन शवाधान मिले है ।

चोपानीमांडो (बेलनघाटी, इलाहाबाद, उ.प्र.)

(d) यहाँ से भी स्थायी जीवन के चिह्न मिले है ।

(e) इनके आवास झोपडी के रूप में बने थे । उत्खनन से चूल्हा, चक्कियाँ तथा मूसल प्राप्त हुई है ।

महदहा (मिर्जापुर, UP)

(f) यहाँ भी पशुओं का बूचडखाना, गोबर रखने के साक्ष्य मिले है ।

(g) यहाँ भी आवासों के साथ शवाधान मिले है । जडवां शवाधान प्राप्त हुए है ।

नवपाषाणकाल (Neolithic age)

नवपाषाण शब्द को सर्वप्रथम जान लुव्वाक ने दिया।

इसे Revolution– गार्डन चाइल्ड ने कहा।

नवपाषाण काल क्रांतिकारी काल था। विश्व संदर्भ में इसकी विशेषताएँ निम्न है –

(a) नये प्रकार के औजारों का निर्माण जिन्हें घिसकर, खुरदराकर तथा पॉलिश कर बनाया गया है । इसमें कुल्हाडी **(axe)** तथा **Chisel** (कुठार) आदि आते है ।

(b) विश्व स्तर पर नियमित खेती का प्रारम्भ

(c) ओखली, मूसल एवं सिलबट्टे का प्रयोग

(d) नियमित पशुपालन (पशुपालन का प्रथम साक्ष्य पश्चिमी एशिया से प्राप्त हुआ है ।)

(e) मृदभांड, चाक का पहिया

(f) स्थायी आवास एवं ग्रामीण समुदाय का विकास कृषि

नवपाषाणिक क्रान्ति का मुद्दा

नवपाषाणिक विशेषताएँ अपने स्वरूप में काफी क्रांतिकारी थी। अतः गार्डन चाइल्ड जैसे विद्वानों ने इसे क्रांतिकारी काल की संज्ञा दी है । हालांकि कुछ विद्वानों का मानना है कि खेती, पशुपालन आदि का प्रारम्भ मध्यपाषाण काल में ही हो चुका था तो क्यों न इसी काल को क्रांति के काल की संज्ञा दी जाये। इसका उत्तर देते हुए गार्डन चाइल्ड ने कहा है कि नवपाषाण से पहले कृषि एवं पशुपालन आदि से कोई गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन नहीं हुआ । यह परिवर्तन नवपाषाण काल में हुआ । अतः इसे ही क्रांति का काल कहना उचित है। अधिकांश विद्वान गार्डन चाइल्ड की बातों से सहमति रखते है ।

नोट –

1. पूर्व में कृषि के विसरण सिद्धान्त के तहत यह माना जाता था कि कृषि का प्रारम्भ नतूफियन संस्कृति (इजराइल, फिलिस्तीन, जॉर्डन, सीरिया/ धवन्याकार प्रदेश) में सर्वप्रथम हुआ। लेकिन अब इसे नहीं माना जाता। अब माना जाता है कि विभिन्न अनाजों की खेती दुनिया में स्वतंत्र रूप से अलग अलग प्रारम्भ हुई। जैसे-पश्चिमी एशिया में सर्वप्रथम जौ तथा गेहूँ, भारत में सर्वप्रथम चावल तथा कपास तथा अमेरिका में सर्वप्रथम मक्का की कृषि प्रारम्भ हुई।
2. मानव द्वारा उपजाये जाने वाली फसलों का क्रम है – जौं, गेहूँ, चावल।
3. मृदभांड निर्माण नवपाषाण काल की अपरिहार्य विशेषता नहीं है। ऐसी भी नवपाषाणिक बस्तियाँ प्राप्त हुई हैं जहाँ से मृदभांड नहीं मिला है।

भारत में नवपाषाण कालः-भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाणकाल के कई स्थल प्राप्त हुये हैं। लेकिन सभी क्षेत्रों की विशेषताएँ एक जैसी (एकरूपता) नहीं हैं, बल्कि इनमें क्षेत्रीय अन्तर दिखाई देते हैं।

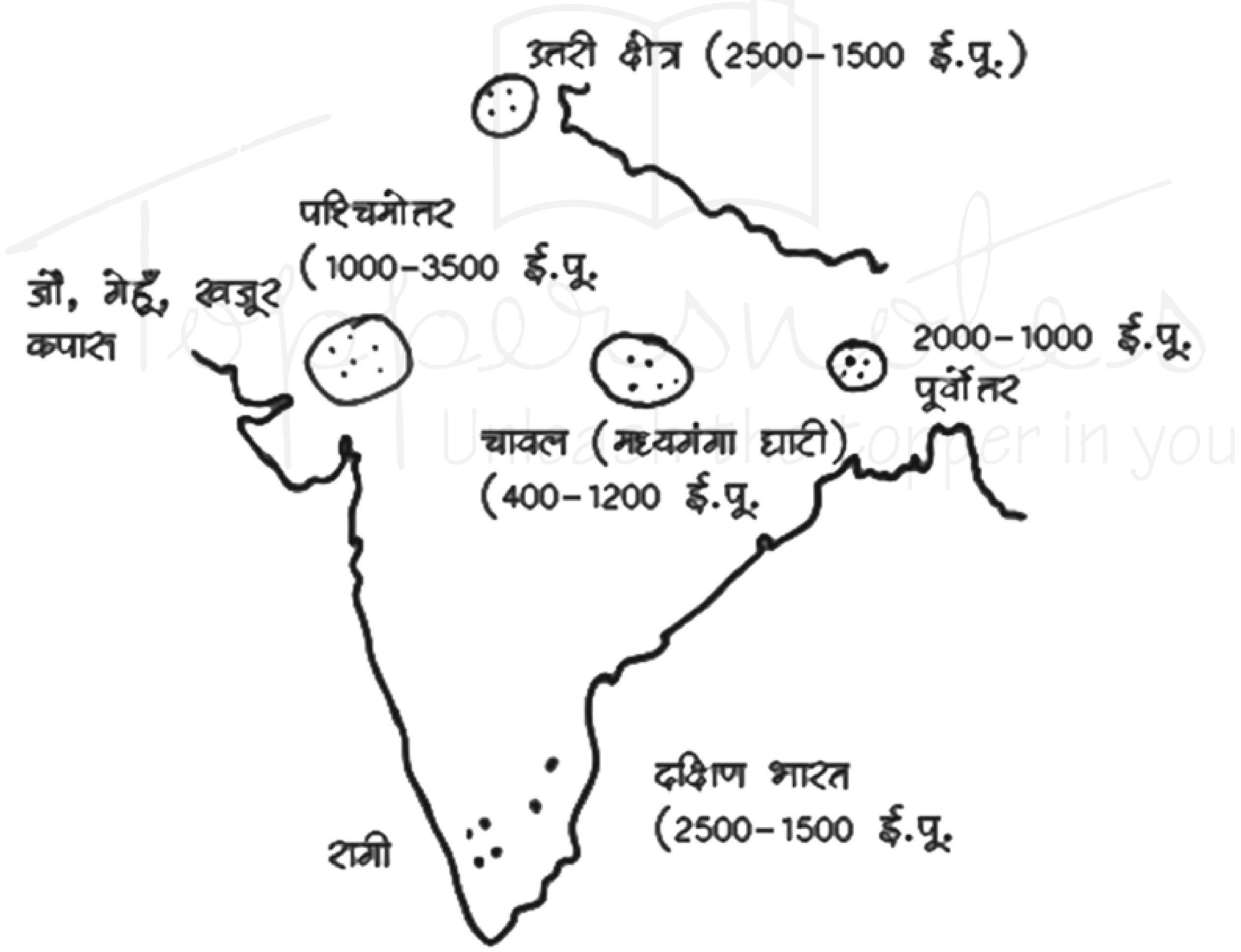

भारतीय नवपाषाण की क्षेत्रीय विविधता :-

पश्चिमोत्तर की नवपाषाणिक संस्कृति (7000–3500 ई.पू.) – इसके तहत मेहरगढ, सरायबोला, किलिगुलमुहम्मद, राणाघुण्डई आदि स्थल आते हैं । इनमें मेहरगढ सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल है । यहाँ से जौ के दो तथा गेहूँ की तीन किस्मों, खजूर, कपास (विश्व में प्रथम)की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं । यहाँ पशुपालन भी महत्वपूर्ण व्यवसाय था । इनकी बस्तियाँ मुख्यतः घास – फूस की थी । लेकिन कहीं – कहीं कच्ची ईंटों के चार कमरों वाले मकान भी बनाये गये थे । यहाँ से अन्नागार भी प्राप्त हुआ है । मृतकों के साथ यहाँ जानवरों (बकरी) को दफनाया जाता है। इससे लगता है कि वे परलोक, आत्मा आदि में विश्वास करते होंगे ।

उत्तरी क्षेत्र (2500– 1500 ई. पू.)

यहाँ के महत्वपूर्ण स्थल बुर्जहोम तथा गुफ्फरकाल हैं । यहाँ का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था । कृषि द्वितीयक व्यवसाय था । यहाँ के लोग गर्तावास (जमीन में गड्ढा खोदकर रहना) में रहते थे ।

बुर्जहोम से मालिक के साथ कुत्ते को दफनाये जाने के साक्ष्य मिले हैं । यहाँ से पत्थर के औजार नहीं मिले हैं । लेकिन जानवरों की हड्डियों के औजार भारी मात्रा में मिले हैं ।

दक्षिण भारत (2500 – 1500 ई. पू.)

यहाँ के महत्वपूर्ण स्थल निम्न हैं –

– कर्नाटक मास्की, ब्रह्मगिरि, हलन, पिकलीहल (यहाँ से काफी संख्या में गोबर राख के टीले मिले हैं), संगनकल्लू
– आन्ध्र प्रदेश – उतनूर
– तमिलनाडु – पयमपल्ली

दक्षिण भारत में भी पशुपालन मुख्य व्यवसाय था। कृषि द्वितीयक था। यहाँ की मुख्य फसल रागी (चारा) थी। यहाँ की लगभग सभी बस्तियों से भारी मात्रा में गोबर राख के टीले मिले हैं ।

मध्यगंगाघाटी (4000– 1200 ई. पू.)

यहाँ के प्रमुख स्थल कोल्डिहवा, महगडा, चोपानीमांडो महदडा आदि हैं । कोल्डिहवा (6000 ई. पू.) से धान की खेती के (जंगली तथा बोया जाने वाला दोनों किस्म) प्रमाण प्राप्त हुये हैं । पूर्व में इसे सबसे प्राचीन तिथि माना जाता था (चावल के मामले में), लेकिन हाल ही में लहुरादेव (संतकबीरनगर UP) से 8000 ई. पू. मे चांवल की खेती किये जाने के प्रमाण मिले हैं । अतः अब इसे सबसे प्राचीन तिथि माना जाता है ।

उत्तरी – पूर्वी क्षेत्र (2000–1000 ई. पू.)

यहाँ के महत्वपूर्ण स्थल असम के कच्छारी मैदानों में सारातारू, मरकडोला तथा देवा जालिहेडिंग है। यहाँ भी पशुपालन मुख्य व्यवसाय था कृषि पर कम बल दिया जाता था। यहाँ के औजार दक्षिणी पूर्वी एशिया के औजारों से मिलते जुलते है। अतः कुछ विद्वान मानते है कि दोनों में सम्बन्ध था।

अन्य क्षेत्र की नवपाषाणिक बस्तियाँ

अन्य क्षेत्रों में चिरांद (छपरा, बिहार यहाँ से पत्थर के औजार नहीं मिले है लेकिन हिरण के सींग पर बने औजार भारी मात्रा में मिले हैं) पांडुरजारढिबि तथा महिषडल (दोनों पं. बंगाल) तथा कुचाई (उडीसा) आदि मुख्य है।

जीवाश्मों / पुरावस्तुओं का तिथि निर्धारण

- निरपेक्ष तिथि निर्धारण विधि
  Absolute dating method
  - वस्तुओं के भौतिक + रासायनिक गुणों के विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।
    - कार्बन–14 डेटिंग C_{14} Dating
    - k-Ar Dating
    - थर्मो लुमिनेसेंस डेटिंग
    - डेंड्रोक्रोनोलोग्य डेटिंग
- सापेक्ष तिथि निर्धारण
  Relative dating
  - इसका निर्धारण उत्खनन के स्तरों के सामान्य समझ तथा वस्तुओं की तुलना करके किया जाता है।

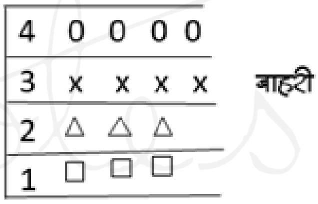

निरपेक्ष तिथि निर्धारण विधियाँ

(1) C_{14} डेटिंग – C_{14} तिथि निर्धारण कार्बन के दो समस्थानिकों – C_{12} एवं C_{14} के आपसी विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। यह केवल जीवित जीवों जो मर चुके है (Animal and Plants) के मामले में ही किया जाता है। इसकी खोज अमेरिकी वैज्ञानिक विलियर्ड लिब्बा ने की थी। इसके लिए उन्हें वर्ष 1949 में केमिस्ट्री का नोबेल प्राप्त हुआ था।

(2) पोटैशियम – ऑर्गन (K–Ar) dating – निर्जीव वस्तुओं के मामले में विशेषतः चट्टानों के मामले में इसका प्रयोग किया जाता है।

K- Ar40 Change - Radioactive

यह सभी ज्ञात विधियों में सबसे प्राचीन तिथि निर्धारण करने वाली विधि है। चट्टानों के अत्यंत प्राचीन तिथि का निर्धारण करने में इसका इस्तेमाल किया जाता है (मुख्यतः भूगर्भ विज्ञान Geology में)